Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 14 ~ Issue 1 (January 2026) pp: 148-151
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

पाब्लो पिकासो की अमूर्त एवं ज्यॉमितीय कला में घनवाद।

प्रियंका वर्मा
शोद्यार्थी
चित्रकला विभाग
एम0एच0पी0जी0 कालेज, मुरादाबाद

प्रो0 नरेन्द्र सिंह
शोध निर्देशक
एम0एच0पी0जी0 कालेज मुरादाबाद

सारांष–

पाब्लो विकासों का आधुनिक कला में बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन्होंने बीसवीं शताब्दी की कला को बहुत ही प्रभावित किया है और घनवाद के विकास में पिकासो का बहुत ही सहयोग रहा है। घनवादी कला में वस्तुओं को एक ही दृष्टिकोण में न दिखाकर बल्कि उन्हें कई दृष्टिकोणों, ज्यॉमितीय रूपों और समतलों में बाँटकर फिर से एक व्यवस्थित क्रम में रखा जाता है। इनकी घनवादी कला में त्रिभुज, आयत, घन, बेलन और कोणीय रूपों का प्रयोग केवल सजावट के लिए नहीं बल्कि वस्तुओं को देखने की नई विधि समझाने के लिए किया गया है। पिकासो ने घनवाद को दो भागों में विभक्त किया है। (1) संश्लेषणात्मक घनवाद (2) विश्लेषणात्मक घनवाद संश्लेषणात्मक घनवाद में कोलाज, मुद्रित कागज और सरल आकृतियों के माध्यम से चित्र को नया रूप देकर प्रस्तुत किया जाता है।

चित्र : द एकॉर्डियनिस्ट

कुंजी शब्द :–

पाब्लो पिकासों, घनवाद, अमूर्त कला, ज्यॉमितीय कला, विश्लेषणात्मक घनवाद, संश्लेषणात्मक घनवाद, बहु–दृष्टिकोण, कोलाज।

प्रस्तावना–

आधुनिक कला के आरम्भ में पाश्चात्य कला में पारंपरिक यथार्थवाद और एक बिन्दु परिप्रेक्ष्य की सीमाओं पर प्रश्न उठने लगे। इसी दौरान घनवाद का विकास पिकासो और जॉर्ज ब्राक की कला से प्रारम्भ होता है। घनवाद ने चित्र को केवल दिखाई देने वाली बाहरी आकृति की नकल मानने के बजाय वस्तु की संरचना, उसके कई पक्षों और चित्र पटल पर स्थानिक सम्बन्धों को विशेष स्थान दिया। विश्लेषणात्मक घनवाद का आरम्भ लगभग 1910 से और संश्लेषणात्मक घनवाद 1912 से एक सुस्पष्ट रूप में दिखाई देने लगा।

पाब्लो पिकासो और घनवाद का विकास

पिकासो ने सर्वप्रथम जब घनवाद का प्रयोग किया था तब उसमें प्रकृति और वस्तुओं को सरल एवं ज्यॉमितीय संरचनाओं में परिवर्तित करने का प्रयास किया था। 1909–12 के बीच पिकासो का विश्लेषणात्मक घनवाद अधिक मानता है कि किसी भी वस्तु की पहचान कभी भी बिल्कुल खत्म नहीं होती बल्कि अनेक समतलों के मध्य संकेतों के रूप में तत्पर रहती है 1912 में जब संश्लेषणात्मक घनवाद आया तो पिकासो ने अपने वास्तविक जीवन से जुड़ी वस्तुएँ जैसे–मुद्रित कागज और कोलाज जैसी तकनीकों को अपने चित्रों में शामिल करने का प्रयास किया। इससे इनके चित्रों की सतह और वास्तविकता के मध्य एक नया सम्बन्ध स्थापित हुआ।

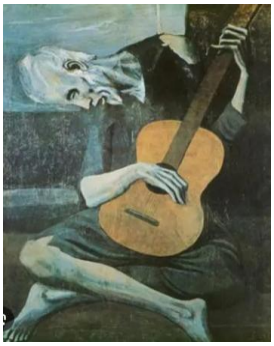

चित्र : बूढ़ा गिटार वादक

पाब्लो पिकासो की कला को पूरी तरह से अमूर्त न कहकर अमूर्तता की ओर बढ़ती

हुई कला कहना ज्यादा उचित है। इनके घनवादी कलाकृतियों में वास्तविकता के साथ ज्यादा सम्बन्ध दर्शाया गया है। जबकि पारंपरिक पहचान से इनका रूप भिन्न पाया जाता है। ज्यॉमितीय समतल, कोण, रेखाएँ एवं एक–दूसरे को परस्पर काटते हुए आकारों में चित्रों को एक नई संरचनात्मक दिशा प्रदान करते हैं। ज्यॉमितीय वस्तुएँ केवल सजाने का माध्यम न होकर बल्कि उसे समझने और देखने का साधन है।

प्रारम्भिक चरण के घनवादी चित्रों में पारदर्शक मिश्री के बड़े–बड़े दाने से (Crystals) से सारे चित्र में बिखरे प्रतीत होते है । विभिन्न तलों को भूरी या हरित आभाओं में प्रायः अनुरंजित किया जाता था। प्रथम तीन वर्षों तक ये घनवादी चित्र लगभग उपेक्षित रहे किन्तु सन् 1990 से इस शैली के आकृतियों की संख्या बढ़ने लगी। न केवल पेरिस नगर के चित्रकार ही घनवाद से प्रभावित हुये बल्कि यूरोप के अन्य देशों के कलाकार, विशेषकर इटली, जर्मनी, रूस और इंग्लैंड भी प्रभावित हुये। जैसा हम कह चुके हैं, घनवादी शैली के विकसित होने के पूर्व कुछ फाववादी चित्रकार अभिव्यक्ति के नाम पर प्राकृतिक वस्तुवों के रूपों और आकारों को ज्यॉमितीय आकारों में बद्ध करके चित्रित करने लगे यद्यपि फाववादी चित्रकारों का सारा ध्यान सशक्त अभिव्यक्ति पर आधारित था। इसके साथ ही फाववादी चित्रकार विशेषकर गोगाँ के नेतृत्व में आदिम जातियों की कला से प्रेरणा ग्रहण करने लगे थे। इन आदिम जातियों की कला का फाववादी कलाकार बारीकी से अध्ययन करने लगे।

विष्लेषणात्मक घनवाद

विश्लेषणात्मक घनवाद के अन्तर्गत पिकासो किसी भी वस्तु को कई भागों में विभक्त करते हैं। इन्होंने एक चित्र के माध्यम से सामने, बगल और ऊपर से दिखाई देने वाले तत्वों को एक साथ दर्शाने का प्रयास किया है। इन्होंने सीमित रंगों का प्रयोग किया है जिसमें धूसर, काले, मटमैले तथा भूरे रंगों का प्रयोग अधिक मात्रा में किया है। चित्रों को पारम्परिक रूप से गहराई में न बनाकर एक सपाट व समतल स्थान पर बनाया गया है। यह प्रक्रिया चित्र का विश्लेषण करके उसे चित्र पटल पर पुनः व्यवस्थित करती है।

संष्लेषणात्मक घनवाद

संश्लेषणात्मक घनवाद के अन्तर्गत चित्रों को अधिक स्पष्ट और सरल रूपों की ओर बढ़ता दिखाई देता है। पिकासो ने कोलाज के रूप में वॉलपेपर, लेबल, समाचार पत्र और रोजमर्रा के रूप में प्रयोग की जाने वाली वस्तुओं का प्रयोग किया है। इससे पता चलता है कि चित्र केवल रंग और ब्रुश के माध्यम से नहीं बल्कि वास्तविक वस्तुओं और तत्वों का एक संयोजन बन गया। इस चरण में ज्यॉमितीय संरचना तो बनी रहती है लेकिन रंग, पैटर्न और सामग्री का प्रयोग पूर्णरूप से स्वतन्त्र हो जाता है।

(i) **'गर्ल विध ए मांडोलिन' (1910) :–** इस आकृति को कई छोटे–छोटे समतलों और ज्यॉमितीय भागों में विभक्त किया गया है सीमित रंगों का संयोजन और जटिलता दर्शकों को एक निश्चित आकृति के रूप में न दिखाकर बल्कि कई संकेतों के माध्यम से दर्शक को समझाने का प्रयास करती है।

(ii) **थ्री म्यूजिषियंस (1921) :–** यह कलाकृति बाद की है इसमें ज्यॉमितीय संरचना तथा स्पष्ट रंग–खण्ड और समतल घनवादी प्रभाव को आगे बढ़ाया गया है।

(iii) **'लेस डेमोइसेल्स द' अविग्नॉन (1907) :–** यह पिकासो की सबसे महत्वपूर्ण संक्रमणकालीन कलाकृतियों में गिनी जाती है। इसमें मानव के शरीर को तीखे कोणीय एवं खण्डित रूपों को दिखाया गया है।

चित्र : लेस डेमोइसेल्स द' अविग्नॉन

(iv) **गुएर्निका (1937) :–** यह पेन्टिंग पाब्लो पिकासो की सबसे महत्वपूर्ण एवं प्रसिद्ध कलाकृतियों में से एक मानी जाती है। इस कलाकृति के द्वारा गुएर्निका पर जो विनाशकारी बमबारी हुई थी उसे दर्शाने का प्रयास किया गया है।

चित्र : गुएर्निका

पिकासो का यह 'गुएर्निका' चित्र करुण रस की आधुनिक शैली की सर्वोत्तम कृति कही जा सकती है ठीक वैसे ही जैसे माइकलएन्जेलो द्वारा उत्कीर्ण मूर्ति ''पिएटा'' शास्त्रीय शैली में। ये दोनों ही महान कलाकृतियाँ करुण रस की साक्षात् मूर्त रूप हैं। कौन सा ऐसा कठोर दिल होगा जो उन्हें देखकर पल भर के लिये भाव विह्वल न हो उठेगा।

(v) **गर्ल बिफोर अ मिरर (1932) :–** इस चित्र के द्वारा एक युवती को शीशे के सामने खड़ा दिखाया गया है। पिकासो युवती की और उसके प्रतिबिम्ब को भिन्न–भिन्न रंगों में चित्रित किया है। इस कलाकृति के माध्मय से बाहरी और अन्तरिक भावना के बीच अन्तर दिखाने का प्रयास किया है।

(vi) **चाइल्ड विध अ डव (1901) :–** यह कलाकृति पिकासो के नीला काल से जुड़ी हुई है। इस पेन्टिंग में एक बच्चे ने कबूतर को पकड़ रखा है जिसमें नीले रंग की प्रधानता है। इस चित्र में सरल आकृति चेहरे पर मासूमियत शान्ति और भावुकता दिखाई देती है पिकासो के नीले काल में सामाजिक जीवन के कठिन परिश्रम और उदासी दिखाई देती है।

चित्र : गर्ल बिफोर अ मिरर

पाब्लो पिकासो की ज्यॉमितीय कला की कुछ प्रमुख विशेषताएँ इसमें खण्डित रूप, अनेक दृष्टिकोण, सपाट समतल, कोणीय रेखाएँ, ज्यॉमितीय आकृतियाँ, सीमित या योजनाबद्ध रंगों का संयोजन, वस्तु एवं पृष्ठभूमि का फिर से गठन तथा दार्शनिक व काल्पनिक तत्वों का मेल। इन विशेषताओं से चित्र अधिक रूचिकर एवं लुभावने लगते हैं।

इस नये ढंग से निरूपित किये जाने वाली प्राचीनतम कलाकृतियों में प्राकृतिक दृश्यों के चित्र बनाये गये। इन चित्रों में समुद्र की लहरों के बीच पैने किनारे दिखाये गये। वृक्षों को और अन्य झाड़ियों को ज्यॉमितीय आकार में बद्ध कर के चित्रित किया गया। कहीं पर त्रिभुजाकार, कहीं पर वर्गाकार और कहीं पर आयताकार। ये प्रारम्भिक चित्र जार्ज ब्रॉक नामक एक फ्रान्सीसी चित्रकार ने अनुरंजित किये थे। इसी कारण इस कलाकार को घनवाद (क्यूबिज्म) का प्रवर्तक माना जाता है। परन्तु कला मर्मज्ञों का मतभेद है। कुछ समालोचक सेजॉ को और कुछ आज के सबसे बड़े चित्रकार 'पाब्लो पिकासो' को इस शैली का जनक मानते हैं।

महत्व :–

पाब्लो पिकासो के बारे में अध्ययन भारतीय कला शिक्षा के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। क्योंकि इससे शोधार्थियों को समझने में सहायता मिलती है कि कला में केवल प्रत्यक्ष अनुकरण नहीं है। किसी भी वस्तु को नई रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है जैसे रेखा, आकार, समतल, लय और संरचना के माध्यम से। भारतीय आधुनिक कला और शिक्षा में भी अमूर्तता, संरचनात्मकता और ज्यॉमितीय सरलीकरण को समझाने के लिए घनवाद एक विशेष महत्व प्रदान करता है।

निष्कर्ष :–

पाब्लो पिकासो और उनका घनवाद आधुनिक कला में एक विशेष पुर्नव्याख्या प्रस्तुत करता है। इन्होंने वस्तु को वास्तविक चित्रित करने के बजाय अनेक दृष्टिकोणों, ज्यॉमितीय समतलों और संकेतों में पुनः व्यवस्थित करके प्रस्तुत किया है। विश्लेषणात्मक घनवाद ने रूपों को तोड़कर एक नई दिशा दी तथा संश्लेषणात्मक घनवाद ने कोलाज के माध्यम से वास्तविक सामग्री का प्रयोग किया।

चित्र : द ट्रैजडी

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. समकालीन भारतीय कला – ममता चतुर्वेदी।
2. आधुनिक कला के आधार स्तंभ – प्रेमचन्द्र गोस्वामी।
3. आधुनिक चित्रकला का इतिहास – रा0वि0 साखलकर।
4. आधुनिक भारतीय चित्रकला – गिर्राज किशोर अग्रवाल
5. पिकासो के चयनित चित्रों के संग्रहालीय अभिलेख एवं कला इतिहास सम्बन्धी अध्ययन।
6. शोध पत्र व जनरल

समस्त चित्र केवल गूगल से लेख के भावार्थ के समझने हेतु लिए गये हैं।